

दिव्य सूक्त ~ प्रयत्नहीन प्रयत्न

नए बन जाओ ।

तुम्हें अन्दर से बाहर तक

नया बनना ही होगा ।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

संस्कृत भाषा में 'दिव्य' का अर्थ होता है दैवी या ईश्वरीय, और 'सूक्त' का अर्थ है, वह कथन जो सर्वोच्च सत्य को उजागर करता है । दिव्य सूक्त : ईश्वर के विषय में सिखावनियाँ ।